पाठ 11, जून 13,
2026 के लिए

रुकावटें

हिंदी अनुवादक:
पादरी विजय पाल सिंह

“केवल यही नहीं, वरन् हम क्लेशों में भी घमण्ड करें, यह जानकर कि क्लेश से धीरज, 4और धीरज से खरा निकलना, और खरे निकलने से आशा उत्पन्न होती है; 5और आशा से लज्जा नहीं होती, क्योंकि पवित्र आत्मा जो हमें दिया गया है उसके द्वारा परमेश्वर का प्रेम हमारे मन में डाला गया है।”

(रोमियों 5:3-5)

हम एक ऐसे संसार में रहते हैं जो पाप और दुख से भरा हुआ है। हम सभी कभी न कभी ऐसी कठिनाइयों का सामना करते हैं जो हमें परमेश्वर के प्रेम पर प्रश्न उठाने के लिए मजबूर कर सकती हैं।

हम इन रुकावटों पर कैसी प्रतिक्रिया देते हैं?

हम अध्ययन करेंगे कि कुछ बाइबल के पात्रों ने विभिन्न प्रतिकूल परिस्थितियों में कैसे प्रतिक्रिया दी, और उनका उदाहरण हमें समान परिस्थितियों का सामना करने में कैसे सहायता कर सकता है।

जीवन के तूफ़ान

बीमारियाँ

आपदाएँ

निराशाएँ

यीशु को देखें

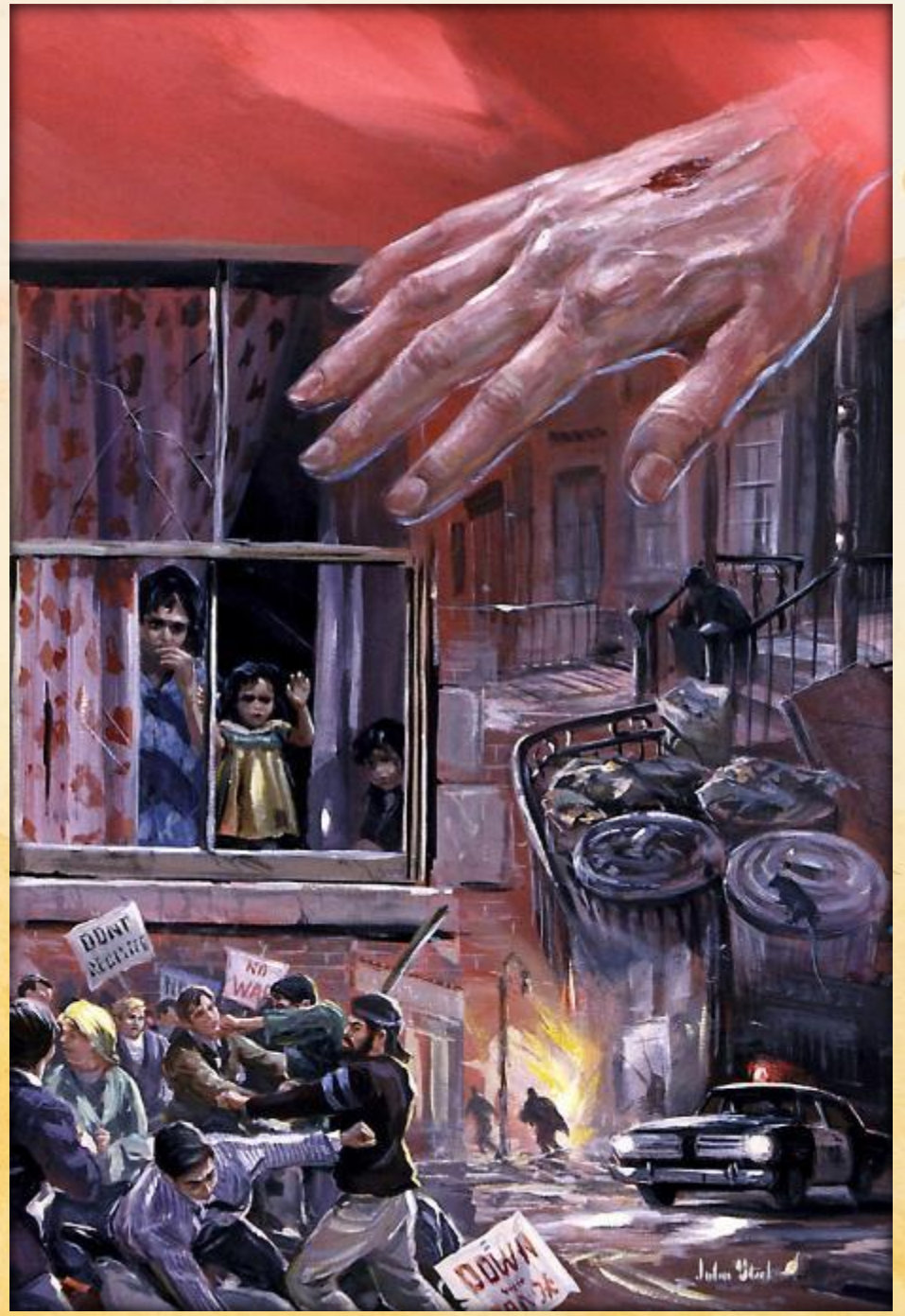

जीवन के तूफ़ान

“तब बड़ी आँधी आई, और लहरें नाव पर यहाँ तक लगीं कि वह पानी से भरी जाती थी।”
(मरकुस 4:37)

आधी रात में गलील की झील को पार करना, यहाँ तक कि तूफ़ान के बीच भी, पतरस, अन्द्रियास, याकूब और यूहन्ना जैसे अनुभवी मछुआरों के लिए कोई नई बात नहीं थी।

फिर भी, उस तूफ़ान ने उन्हें घेर लिया। हवा ने लहरों को इतना उग्र कर दिया कि नाव पानी से भरने लगी और उनका जीवन खतरे में पड़ गया। तब उन्हें एहसास हुआ... यीशु कहाँ है? क्या वह सो रहा है? वह हमारी मदद क्यों नहीं कर रहा? क्या उसे हमारी परवाह नहीं है? (मरकुस 4:35-38)।

हमारे जीवन में भी तूफ़ान आते हैं। हम यीशु से सहायता माँगते हैं, पर ऐसा लगता है जैसे वह सो रहा हो। हमें उसकी उपस्थिति महसूस नहीं होती। लेकिन वह वहाँ होता है।

उस क्षण की प्रतीक्षा करें जब वह हमारे तूफ़ान को डाँटेंगा: “शान्त रह, थम जा!” (मरकुस 4:39)। वह हमारी चिन्ता करता है (1 पतरस 5:7)। वह हमारे तूफ़ानों को शांत कर सकता है। जब वह ऐसा करे, तो उसकी स्तुति करना न भूलें (मरकुस 4:40-41)।

बीमारियाँ

“क्योंकि वह कहती थी, “यदि मैं उसके वस्त्र ही को छू लूँगी, तो चंगी हो जाऊँगी।”
(मरकुस 5:28)

बारह वर्षों तक रक्तस्राव (खून बहने की बीमारी) से पीड़ित रहने और किसी भी वैद्य से चंगा न हो पाने के कारण वह स्त्री निर्धन और निराश हो गई थी (मरकुस 5:25-26)। आज भी कुछ ऐसे देश हैं जहाँ मुफ्त चिकित्सा सुविधा उपलब्ध नहीं है, और यह कहानी अब भी वास्तविकता हो सकती है।

किसी न किसी रूप में, हम सभी ऐसी परिस्थितियों का सामना कर सकते हैं जहाँ बीमारी हमें बाँध लेती है और घुटन पैदा करती है, और हमें कोई राहत नहीं मिलती।

उस स्त्री ने यीशु में समाधान देखा, और उसके विश्वास ने उसे चंगा किया (मरकुस 5:27-29)।

हमें विश्वास रखना चाहिए कि यीशु कुशल डॉक्टरों के माध्यम से हमें चंगा कर सकता है, या सीधे हमारे लिए आश्चर्यकर्म कर सकता है।

हर स्थिति में, यीशु हमें आमंत्रित करता है कि हम अपने सारे बोझ और चिंताएँ उस पर छोड़ दें (मत्ती 11:28-30)।

आपदाएँ

"और अपनी खाल के इस प्रकार नष्ट हो जाने के बाद भी, मैं शरीर में होकर परमेश्वर का दर्शन पाऊँगा।" (अय्यूब 19:26)

युद्ध, हिंसा और प्राकृतिक आपदाओं ने अय्यूब के जीवन को पूरी तरह बदल दिया (अय्यूब 1:13-19)। हम सभी किसी न किसी प्रकार की आपदाओं के संपर्क में आते हैं, चाहे वे प्राकृतिक हों या इस संसार में व्याप्त बुराई के कारण उत्पन्न हुई हों।

हम कैसे प्रतिक्रिया देंगे? अय्यूब ने कैसे प्रतिक्रिया दी?

उसने न तो परमेश्वर को दोष दिया और न ही उसे ठुकराया।

वह पूरी शक्ति से परमेश्वर से चिपका रहा।

उसने सबसे अंधकारमय क्षणों में भी भरोसा रखा।

उसने अपनी दृष्टि एक महिमामय भविष्य पर टिकाई (अय्यूब 19:25-27)।

यदि हम हिम्मत न हारें, तो हम देखेंगे कि हमारी सबसे कठिन परीक्षाओं में भी परमेश्वर हमेशा हमारे साथ होता है। वह हमसे प्रेम करता है और हमें सामर्थ देता है कि हम कमजोरी से शक्ति, निराशा से साहस, और आपदा से आशा प्राप्त करें (योएल 3:10; रोमियों 5:3-5)।

यदि आप कठिन समय से गुजर रहे हैं, तो इस बात पर मनन करें कि परमेश्वर का प्रेम और आपकी देखभाल ही आपके जीवन की सबसे सुरक्षित और स्थिर चीज है।

निराशाएँ

"परन्तु हमें आशा थी कि यही इस्राएल को छुटकारा देगा।..." (लूका 24:21ए)

दृष्टिकोण: यीशु वह मसीह हैं जो इस्राएल को छुटकारा देगा। वास्तविकता: वह मर चुका है (लूका 24:18-21)।

उनकी निराशा इतनी गहरी थी कि वह यीशु के पुनरुत्थान के सबसे स्पष्ट प्रमाण को भी स्वीकार नहीं कर सके (लूका 24:22-24)।

धैर्यपूर्वक, यीशु ने उनकी आशा को फिर से जागृत करने में सहायता की। अंत में "उनकी आँखें खुल गईं" (लूका 24:31), और वे दौड़कर उन लोगों को उत्साहित करने गए जो अभी भी निराश थे (लूका 24:32–35; 2 कुरिन्थियों 1:4)। हम उनके अनुभव से क्या सीख सकते हैं?

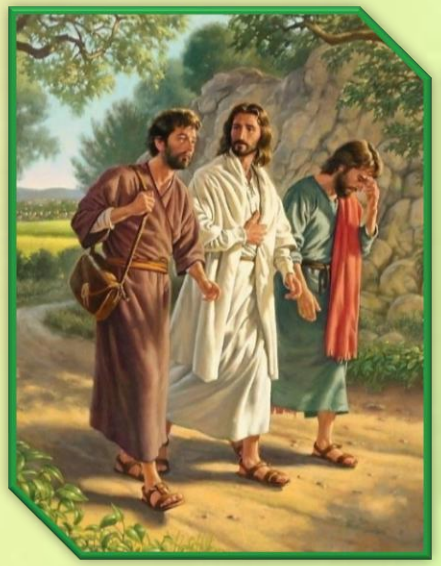

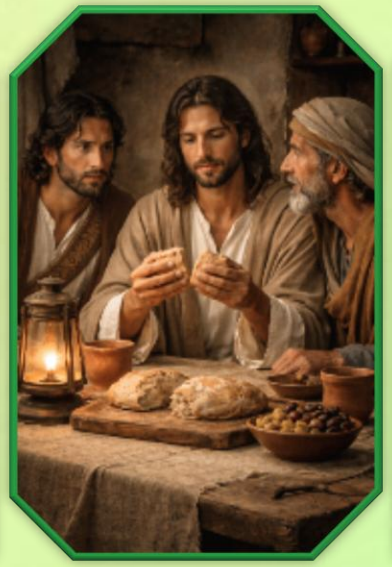

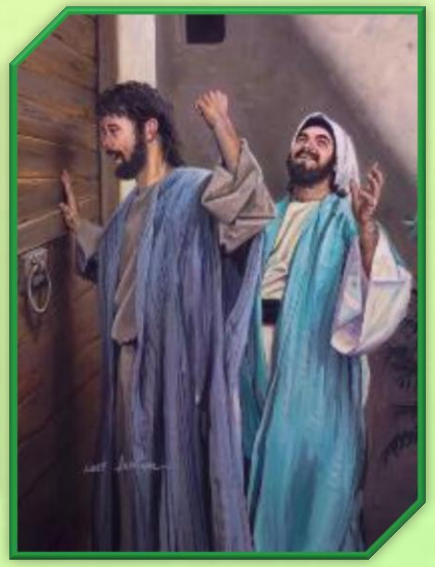

- हमें संदेह को अपने मन में जड़ नहीं जमाने देना चाहिए।
- हमारी निराशाओं में भी यीशु हमारे साथ चलता है।
- यदि हम उसे अनुमति दें, तो वह हमारी उलझनों को दूर करेगा।
- यीशु हमारी वास्तविकता को हमसे बेहतर जानता है।

यीशु को देखें

"क्योंकि मैं समझता हूँ कि इस समय के दुःख और क्लेश उस महिमा के सामने, जो हम पर प्रगट होनेवाली है, कुछ भी नहीं हैं।" (रोमियों 8:18)

जब एलेन जी. व्हाइट गहरी निराशा में थीं, तब उन्हें एक दर्शन हुआ जिसमें उन्होंने यीशु को देखा।

उन्होंने समझ लिया कि वह उनकी हर परिस्थिति को भली-भाँति जानता है। एक समय यीशु ने अपना हाथ उनके सिर पर रखकर उनसे कहा, "डरो मत।"

उन्होंने महिमामय दृश्य देखे, और उन्हें ऐसा प्रतीत हुआ मानो उन्होंने स्वर्ग की सुरक्षा और शांति को प्राप्त कर लिया हो।

इस दर्शन ने उन्हें आशा और विश्वास दिया, और यह निश्चितता दी कि वह परमेश्वर पर भरोसा कर सकती हैं।

"हम जानते हैं कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उनके लिये सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती हैं; अर्थात् उन्हीं के लिये जो उसकी इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं।" (रोमियों 8:28)

"किसी भी बात की चिन्ता मत करो; परन्तु हर एक बात में तुम्हारे निवेदन, प्रार्थना और विनती के द्वारा धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख उपस्थित किए जाएँ। तब परमेश्वर की शान्ति, जो सारी समझ से परे है, तुम्हारे हृदय और तुम्हारे विचारों को मसीह यीशु में सुरिक्षत रखेगी।" (फिलिप्पियों 4:6-7)

"हे मेरे भाइयो, जब तुम नाना प्रकार की परीक्षाओं में पड़ो, तो इसको पूरे आनन्द की बात समझो, 3यह जानकर कि तुम्हारे विश्वास के परखे जाने से धीरज उत्पन्न होता है। 4पर धीरज को अपना पूरा काम करने दो कि तुम पूरे और सिद्ध हो जाओ, और तुम में किसी बात की घटी न रहे। [...]धन्य है वह मनुष्य जो परीक्षा में स्थिर रहता है, क्योंकि वह खरा निकलकर जीवन का वह मुकुट पाएगा जिसकी प्रतिज्ञा प्रभु ने अपने प्रेम करनेवालों से की है।" (याकूब 1:2-4, 12)

"पर उसने मुझ से कहा, "मेरा अनुग्रह तेरे लिये बहुत है; क्योंकि मेरी सामर्थ्य निर्बलता में सिद्ध होती है।" इसलिये मैं बड़े आनन्द से अपनी निर्बलताओं पर घमण्ड करूँगा कि मसीह की सामर्थ्य मुझ पर छाया करती रहे।"
(2 कुरिन्थियों 12:9)

“हर व्यक्ति के जीवन में ऐसे समय आते हैं जब तीव्र निराशा और पूर्ण हताशा का अनुभव होता है—ऐसे दिन जब दुख ही भाग्य बन जाता है, और यह विश्वास करना कठिन हो जाता है कि परमेश्वर अब भी अपने पृथ्वी पर जन्मे बच्चों के प्रति दयालु उपकारी है; ऐसे दिन जब परेशानियाँ आत्मा को इस कदर घेर लेती हैं कि मृत्यु जीवन से अधिक प्रिय लगने लगती है। ऐसे समय में बहुत से लोग परमेश्वर पर अपनी पकड़ खो देते हैं और संदेह की दासता, अविश्वास के बंधन में पड़ जाते हैं। यदि हम ऐसे समय में आत्मिक समझ से परमेश्वर की व्यवस्थाओं के अर्थ को पहचान पाते, तो हम देखते कि स्वर्गदूत हमें स्वयं से बचाने का प्रयास कर रहे हैं, हमारे पाँव को शाश्वत पहाड़ों से भी अधिक दृढ़ नींव पर स्थापित करने का प्रयत्न कर रहे हैं; और तब एक नया विश्वास, एक नया जीवन उत्पन्न हो जाएगा।”

ई जी व्हाइट (भविष्यवक्ताओं और राजाओं, पृष्ठ 162)